मूल्य / धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 53 अंक 2 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
फरवरी 2017 | बहाई वर्ष : 173

निगूढ़ वचन

हे धरती के पुत्र !

तू यदि मुझे चाहे तो मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को मत चाह और यदि तू मेरे सौन्दर्य को निरखना चाहे तो अपने नेत्रों को मूंद ले, क्योंकि मेरी इच्छा और मेरे अतिरिक्त किसी अन्य की इच्छा अग्नि और जल के समान एक ही हृदय में एक साथ नहीं रह सकती।

—बहाउल्लाह

कर्नाटक में बहाई कोष से सम्बन्धित राज्य स्तरीय सम्मेलन

बंगलौर से थोड़ी दूर, रूपान्तरा अनेकल समुदायसमूह में एक राज्य स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय था बहाई कोष। सम्मेलन का मुख्य नारा था– "प्रत्येक व्यक्ति सेवा दे सकता है, सभी प्रार्थना कर सकते हैं, सभी आध्यात्मिक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और सभी बहाई कोष में दान दे सकते हैं।" सम्मेलन में मैसूर, मंगलोर, मांड्या, महादेवपुरा, चंद्रपुरा और कर्नाटक के अन्य क्षेत्रों के बहाई उपस्थित थे। सलाहकार राजन सावंत की उपस्थिति से सम्मेलन गौरवान्वित था।

सम्मेलन के आरम्भ में बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रार्थनाओं के बाद सहायक मंडल सदस्य अमिता यगाग्नी ने बहाई कोष में दान के महत्व पर वक्तव्य प्रस्तुत किया और अक्सर उद्धृत किये जाने वाले धर्मसंरक्षक के इन शब्दों के गिर्द अपनी बातें रखीं कि "हमें निश्चय ही उस फव्वारे या झरने के समान बनना चाहिये जो निरंतर अपने संपूर्ण स्वत्व को लुटाता रहता है और निरंतर किसी अदृश्य स्रोत से दोबारा भर जाता है।" दरिद्र हो जाने के भय से मुक्त होकर और अपने बंधु–बांधवों के उपकार के लिये प्रभु की असीम अनुकम्पा पर भरोसा रखते हुये कोष में बराबर दान देते रहना ही जीवन का सच्चा अर्थ है।

इस अवसर पर बोलते हुये सलाहकार राजन सावंत ने आध्यात्मिक परिवर्तन और बहाई पहचान पर अपनी वार्ता केन्द्रित की और कहा रूही पुस्तक–एक के अध्ययन के बाद जो आध्यात्मिक परिवर्तन व्यक्ति में आता है उसे केवल महसूस किया जा सकता है। व्यक्ति नियमित रूप से प्रार्थना करना शुरू कर देता है, उपवास के महत्व को समझता है, आत्मा की अनन्त यात्रा की पहचान पाता है, प्रभुधर्म का संदेश देना और कोष में दान देना अपना कर्तव्य मानने लगता है और इस प्रकार धीरे–धीरे अपनी बहाई पहचान बनाता है।



राज्य स्तरीय बहाई कोष सम्मेलन में प्रतिभागी

समुदायसमूहों की चर्चा करते हुये सलाहकार सावंत ने कहा कि सन् 2001 में केवल 4 क्लस्टर थे, सन् 2005 में 200 क्लस्टर हो गये और सन् 2009 में 2000 क्लस्टर स्थापित हो गये। यह ईश्वर का आशीर्वाद ही है कि सन् 2015 में 5000 क्लस्टर हमारे पास हो गये हैं। जैसे–जैसे समुदायसमूह बढ़े

शेष पृष्ठ 4 पर

कक्षा में बच्चों की नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर बल

• उत्तर प्रदेश में बेला, औरैया में 15 जनवरी, 2017 को ग्राम मल्हौसी में स्थित बहाई भवन में बच्चों के बेहतर भविष्य निर्माण के लिये एक आध्यात्मिक बाल कक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें बाल कक्षा के शिक्षकों ने बच्चों को आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा दिये जाने पर बल दिया। इस अवसर पर शिक्षकों व बच्चों को संबोधित करते हुये सहायक मंडल सदस्य श्री रामपाल ने कहा कि जब तक बच्चों को विद्यालयों में समुचित रुप से आध्यात्मिक शिक्षा नहीं मिलेगी तब तक बच्चों में परिपूर्ण ज्ञान का उद्भव नहीं होगा, क्योंकि आध्यात्मिक शिक्षा स्वयं में परिपूर्ण शिक्षा है, इसके बिना शिक्षा अधूरी रहती है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक शिक्षा से व्यक्ति के अन्दर का सारा अज्ञान दूर हो जाता है, उन्होंने शिक्षकों को सुझाव दिया कि वे अपनी कक्षा शुरु करने के पूर्व वातावरण को आध्यात्मिक बनायें, इससे बच्चों का मन एकाग्र हो जाता है और वे ग्रहणशील हो जाते हैं।



मल्हौसी बहाई भवन में बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के लिए आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

इस मौके पर स्थानीय आध्यात्मिक सभा, बेला के सचिव व नैतिक शिक्षक घनश्याम सिंह ने कहा कि नैतिक शिक्षा जननी है शिक्षा की, इसलिये सभी बच्चों को अनिवार्य रुप से नैतिक शिक्षा मिलनी चाहिये, उन्होंने सुझाव दिया कि देश के सभी प्राथमिक व उच्च विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाया जाना चाहिये। उन्होंने बताया कि प्राचीन काल में बच्चों को नैतिक शिक्षा के लिये गुरुकुल भेजा जाता था, बाद में गुरुकुल शिक्षा का भी चलन

शेष पृष्ठ 4 पर



एटा में सड़क दुर्घटना में मारे गये बच्चों की स्मृति में प्रार्थनासभा

इस अंक में

एक नई प्रेरणादायक पहल

महाराष्ट्र में नासिक स्थित देवलाली के बहाईयों ने कुछ दिनों पहले देखा कि सड़क पर कुछ बच्चे घूम रहे थे, उनमें से कुछ किशोरयुवा भी थे। उन बहाई मित्रों ने आपस में चर्चा की कि क्यों न इनके माता–पिता से मिलें। सुबह के समय गृहभ्रमण पर सुश्री पूर्णिमा पवार और श्रीमती कविता पवार गईं, वहां पर कई सारे निर्माण के काम चल रहे थे और कुछ महिलायें रेत एक जगह से दूसरी जगह ढो रही थीं। उनके साथ वार्तालाप शुरू की, उनसे पूछा कि वह किस जगह रहते हैं जो बच्चे



सड़क पर घूम रहे हैं वह उन्हीं के हैं, क्या वह स्कूल जाते हैं इत्यादि। इस पर उन महिलाओं ने कहा कि वे दूसरे शहर से यहां आईं हैं और काम के सिलसिले में एक जगह से दूसरी जगह जाते रहते हैं और न ही उनके पास इतने पैसे हैं कि वे बच्चों को स्कूल भेज सकें। यह सुनने के बाद बहाई मित्रों ने उनसे कहां कि वे यहाँ से कुछ दूरी पर बच्चों की कक्षाओं का आयोजन करते हैं और उस कक्षा में 6 से 11 और 11 से 15 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे होते हैं, जिसमें उन्हें कहानियाँ, गीत, प्रार्थनाएँ, चित्रकारी और ईश्वरीय वचन सिखाते हैं। उन महिलाओं ने कुछ देर तक उनकी बातें सुनी और फिर कहा कि हमारे पति शाम को घर आते हैं इसलिए आप शाम को हमारे घर पर आइये, वहीं बात करेंगे।

शाम को किसी कारणवश न जाकर अगले दिन सुबह बहाई मित्र उन महिलाओं के घर पर पहुँचे तो बच्चों की माता ने बताया कि वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती हैं परन्तु उनके पास पढ़ाने हेतु कोई सामग्री नहीं है और न ही पैसे। इस पर बहाई मित्रों ने कहा कि हमें बच्चों को पढ़ाने के लिए न कोई पैसा चाहिए और न कोई सामग्री। यह सुनकर वह महिला अत्यंत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि मैं अन्य महिलाओं से भी बात करूंगी ताकि वे भी अपने बच्चों को इन कक्षाओं में पढ़ने के लिए भेजें। बहाई मित्रों ने उन्हें आश्वासन दिया कि हर शनिवार और रविवार को एक घंटे आपके घर के नजदीक कुछ आध्यात्मिक वर्ग शुरू किये जायेंगे।

बहाई मित्रों ने अपने दल में चर्चा की कौन–कौन से मित्र कौन–सी कक्षा का संचालन करेंगे। चर्चा के उपरान्त बहाई मित्रगण अपनी योजना बनाकर सामग्री के साथ कक्षा के लिए उस स्थान पर पहुँचे। वहाँ जाने के बाद उन्होंने देखा कि सात किशोरयुवा वहाँ पर मौजूद थे, उन्हें वर्णाकार पढ़ाने की शुरूआत की। छह अन्य बच्चों को खोज कर उस वर्ग में शामिल किया। दोपहर के समय माता–पिता इस वर्ग को देख रहे थे। अन्य माता–पिताओं ने भी अपने बच्चों को इस वर्ग में शामिल करने का निर्णय लिया। बहाई मित्रों के लिए वहाँ बिताये दो घंटों का अनुभव सर्वोच्च अनुभव रहा।

— —



जम्मू–कश्मीर में जम्मू के सरस्वती कुंज स्कूल और राजौरी के आर्मी गुडविल पब्लिक स्कूल में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें पहले, दूसरे और तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को उपहार और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

सांख्यिकीय अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

भोपाल मध्यप्रदेश में सांख्यिकीय अधिकारियों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय सांख्यिकीय अधिकारी श्री टी. प्रभाकरण के मार्गदर्शन में 24 एवं 25 दिसम्बर, 2016 को आयोजित किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश से कुल 18 मित्रों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम में राज्यों में न्याय मंदिर के संदेश 29 दिसम्बर, 2015 के प्रमुख अंशों का भी अध्ययन किया गया। साथ ही, एसआरपी 3.0 का प्रशिक्षण दिल्ली से आये श्री टी. प्रभाकरण के द्वारा दिया गया व हर एक राज्यों में दर्ज किए गये सांख्यिकीय आंकड़ों को प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। मित्रों ने समूह में बैठकर अपने–अपने राज्यों के लिए एक डाटा संग्रहण केन्द्र बनाया,



भोपाल में आयोजित सांख्यिकी कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

चल रही एसआरपी 3.0 की समीक्षा की गई कि 2015 में दिल्ली में आयोजित एसआरपी 3.0 के सेमीनार के अनुसार राज्यों में इस प्रोग्राम को कितना उपयोग में लाया गया एवं मित्रों ने सफलताओं एवं चुनौतियों के अनुभव को बांटा।

इस कार्यक्रम के दौरान विश्व जिसमें आस–पास के क्लस्टर की जानकारी एक जगह एकत्रित कर सकें व जनवरी माह के पहले सप्ताह तक चल रहीं गतिविधियों के आंकड़े एवं माह की 10 तारीख तक क्लस्टर ग्रोथ प्रोफाइल राष्ट्रीय सांख्यिकीय विभाग को भेजने की योजना बनाई।

दिल्ली में युवा विकास सम्मेलन का आयोजन

मध्य प्रदेश की डॉ. ललिता शर्मा ने 19 दिसम्बर, 2016 को दिल्ली में आयोजित एक सम्मेलन में हिस्सा लिया। सम्मेलन का आयोजन भारत सरकार के युवा मामलों के मंत्रालय द्वारा किया गया। सम्मेलन में विचार–विमर्श का विषय था युवा और विकास।

बहाई समुदाय द्वारा चलाये जा रहे युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम का



हवाला देते हुये श्रीमती शर्मा ने एक 20–सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी सराहना की गई।

भारत सरकार के युवा मामलों के मंत्री विजय गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर सम्मेलन की ओर से एक प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें युवाओं के सशक्तिकरण के लिये बहाई समुदाय द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों को भी उदाहरण के तौर पर शामिल किया गया।

समाचारचित्र



श्रीमती रेखा सिंह और श्री रजनीश सिंह (सहायक मंडल सदस्य, बिहार) की सुपुत्री मीनू मीनाक्षी एवं श्रीमती रीता रंजनी सिंह और डॉ. उदय शंकर सिंह के सुपुत्र कुमार अग्निवेश का विवाह 28 नवम्बर, 2016 को बहाई विधि–विधान के अनुसार सम्पन्न हुआ। सभी वैवाहिक कार्यक्रम स्थानीय आध्यात्मिक सभा, पटना के तत्वावधान में हुए। इस मांगलिक अवसर पर महाद्वीपीय सलाहकार श्री राजन सावंत, श्री दृगपाल सिंह, सहायक मंडल सदस्य एवं परिषद के सदस्यों के अलावा बड़ी संख्या में अन्य बहाई मित्रगण भी उपस्थित थे।



राज्य बहाई परिषद राजस्थान द्वारा सभी संस्थागत सदस्यों और एजेंसियों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 40 मित्रों ने भाग लिया। इस सम्मेलन का उद्देश्य विश्व न्याय मन्दिर के 29 दिसम्बर, 2015 के संदेश के माध्यम से पाँच वर्षीय योजना के अंतर्गत सभी सदस्यों को अपनी भूमिका को अच्छी तरह से समझना था। सभी मित्रगण ने छोटे समूहों में विभाजित होकर गद्यांश 1 से 29 तक का अध्ययन किया। इस दौरान सभी मित्रों ने अपने क्लस्टर के अनुभव भी साझा किए।



चीन की एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के चेयरमैन रेजुन मु अपने परिवार के साथ बहाई उपासना मंदिर जब आये तो उन्होंने मंदिर की वास्तुकला और बहाई समुदाय द्वारा की जा रही सामाजिक सेवा की भूरि–भूरि सराहना की और चीनी भाषा में बहाई साहित्य प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्न हुये।

समाचारचित्र



स्वामी विवेकानन्द के जन्मोत्सव के अवसर पर विश्व युवक केन्द्र द्वारा 11 और 12 जनवरी, 2017 को राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बहाई प्रतिनिधि के रूप में डॉ. ए. के. मर्चेंट उपस्थित रहे। डॉ. मर्चेंट ने धर्म और आस्था विषय पर जो अपना वक्तव्य दिया उसे सुनकर उपस्थित सभी मित्रगण बहुत प्रभावित और प्रेरित हुए। युवाओं के समूह में बातचीत के दौरान युवाओं ने बताया कि उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के बारे में बहुत कुछ सीखा है। समारोह के दौरान युवाओं द्वारा विमुद्रीकरण विषय पर संक्षिप्त भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें तीन जजों में से एक डॉ. ए. के. मर्चेंट भी थे।



महाराष्ट्र में सांगली समुदाय के श्री राजेन्द्र शितोले और श्रीमती विद्या शितोले के सुपुत्र श्री योगेश शितोले का विवाह दिल्ली के तेहखंड समुदाय के श्री अनिल महतो और श्रीमती सीता देवी की सुपुत्री सुश्री रेखा के साथ बहाई विधिविधान के अनुसार 16 जनवरी, 2017 को स्थानीय आध्यात्मिक सभा, दिल्ली के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।



बिहार में खगड़िया क्लस्टर के विजयनगर समुदाय में सुश्री बबिता के घर पर एक भक्तिपरक बैठक का आयोजन किया गया। इस भक्तिपरक बैठक में घर के सभी सदस्य उल्लासपूर्वक शामिल हुए। सभी घर वालों ने सप्ताह में एक दिन भक्तिपरक बैठक करने का प्रण लिया।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

खगड़िया में अभिभावक बैठक का आयोजन

बिहार में खगड़िया के बहाई भवन में 13 जनवरी, 2017 को एक अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें 10 माताओं ने भाग लिया।

इस बैठक का प्रारम्भ प्रार्थनाओं से किया गया, उसके उपरान्त में प्रार्थना सभा का आयोजन कर इन किशोरों की पावन चेतना को जगायें, कैसे इसे आध्यात्मिक माहौल में पलने दें।

इसके अलावा, बहाउल्लाह के 200वें जन्मोत्सव महापर्व की अभी से तैयारी तथा सभी अभिभावकों



खगड़िया बहाई भवन में आयोजित अभिभावक बैठक के प्रतिभागी

अभिभावकों से कई विषयों पर वार्तालाप की गई। सबसे पहले, किशोरावस्था से संबंधित वार्तालाप हुई कि किशोरावस्था क्या है, इसके ऊपर सामाजिक, नकारात्मक और सकारात्मक शक्ति का प्रभाव। फिर दूसरा विषय था कि माता–पिता का इन किशोरों के प्रति दायित्व और तीसरा था कि कैसे अपने घरों के साथ–साथ पूरे परिवार का योगदान पर चर्चा और अंत में बहाई विवाह से संबंधित विषय पर भी गहन वार्तालाप की गई। इस बैठक के परिणामस्वरूप सभी अभिभावकों ने अपने घरों में प्रार्थना सभा करने तथा किशोरों को नियमित रूप से समूहों में भेजने का भी निर्णय लिया गया।

● निधन

श्री रामबहादुर सिंह दिनकर

हमें यह बताते हुए अत्यंत खेद हो रहा है कि बिहार के खगड़िया क्लस्टर के एक वरिष्ठ समर्पित बहाई श्री रामबहादुर सिंह दिनकर 28 जनवरी, 2017 को आभालोक में गमन कर गये। 64 वर्षीय श्री दिनकर ने अपने जीवनकाल में अनेक वर्षों तक बहाई संस्थाओं के सदस्य के रूप अपनी सेवायें प्रदान कीं। उनकी समर्पित सेवाओं के लिए सदैव उन्हें याद रखा जायेगा। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

श्री के. सी. गुप्ता

हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि स्थानीय आध्यात्मिक सभा, अजेमर के सदस्य श्री के. सी. गुप्ता का 19 नवम्बर,



2016 को निधन हो गया। श्री गुप्ता पिछले 5 वर्षों से स्थानीय सभा के सदस्य थे और इस दौरान उन्होंने कई गतिविधियों में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

कक्षा में बच्चों की नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा पर बल

पृष्ठ 1 का शेष

नहीं रहा और नैतिक शिक्षा की उपेक्षा हो गयी, जिससे समाज का वातावरण दूषित हो गया। उन्होंने कक्षा में उपस्थित सभी बच्चों को प्रतिदिन प्रातः उठने के बाद व रात को बिस्तर पर जाने के पूर्व ईश वन्दना व माता–पिता एवं बड़ों का अभिवादन करने का सुझाव दिया और बच्चों को मेहनत से पढ़ने व सभी प्रकार के अंधविश्वासों, नशीले पदार्थों से बचने तथा परिजनों और समाज को बचाने की सीख दी।

• 22 जनवरी, 2017 गुरुवार को एटा जनपद के अलीगंज थाने के अर्न्तगत हुई स्कूल बस दुर्घटना में मारे गए छात्रों की आत्मा की शांति के लिये बहाई मित्रों ने शोक सभायें आयोजित कीं। स्थानीय आध्यात्मिक सभा बेला के मार्गदर्शन में ग्राम मनुआं पुर्वा में स्थानीय सभा सदस्या प्रमिला सिंह के आवास पर आयोजित शोकसभा में मोमबत्ती जलाकर दिवंगत छात्रों को भावभीनी श्रद्धांजलि दी व उनकी आत्मा की शांति के लिये प्रार्थनायें कीं।

इसी तरह स्थानीय आध्यात्मिक सभा याकूबपुर द्वारा कस्बे के आकांक्षा जूनियर हाईस्कूल में शोक सभा आयोजित की गयी, जिसमें उपस्थित बहाई मित्रों ने प्रार्थनायें कर दिवंगत छात्रों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

कर्नाटक में बहाई कोष से सम्बन्धित राज्य स्तरीय सम्मेलन

पृष्ठ 1 का शेष

वैसे–वैसे ज़रूरतें बढ़ी और जैसे–जैसे ज़रूरतें बढ़ेंगी वैसे–वैसे हमें भौतिक संसाधनों को जुटाने के लिये कोष में अधिक–से–अधिक दान देने की ज़रूरत भी होगी।

सम्मेलन के दूसरे दिन सहायक मंडल सदस्य शीला ने बहाई कोष के प्रति हमारी धारणा की चर्चा की और त्याग तथा दान के सम्बन्ध में कुछ सच्ची कहानियां सुनाई। नीतू बड़जाते ने एक मार्मिक कथा सुनाई कि किस प्रकार एक गरीब व्यक्ति ने अपना जीवन ही ईश्वर की इच्छा के अनुकूल ढाल लिया और अपने जीवन का हर सुखचैन तथा भौतिक सम्पदा प्रभुधर्म की प्रगति के लिए दान कर दिया।

कर्नाटक राज्य बहाई परिषद के कोषाध्यक्ष गणेश शिनॉय ने धर्मसंरक्षक की कही बातों को याद दिलाते हुये कहा कि जहाँ कहीं भी स्थानीय आध्यात्मिक सभा की स्थापना की जाती है वहाँ बहाई कोष नामक संस्था की भी स्थापना की जानी चाहिये। उन्होंने कहा कि बहाउल्लाह का आशीष कोष में दान देने से प्राप्त होता है और यह सौभाग्य केवल बहाईयों को ही उपलब्ध है। उन्होंने विस्तार से बतलाया कि हर स्तर पर किस प्रकार कोष का प्रबन्धन किया जाता है। इस अवसर पर उन्होंने राज्य के बजट का एक खाका भी प्रस्तुत किया और अनुयायियों से आग्रह किया कि राज्य को आत्मनिर्भर बनाने के लिये वे त्यागपूर्ण दान दें।

परिषद योजना बना रही है कि इस प्रकार के सम्मेलन समुदायसमूह और स्थानीय स्तर पर भी आयोजित किये जायें ताकि बहाईयों के बीच कोष से सम्बन्धित अधिक–से–अधिक जानकारी पहुँचायी जा सके।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.02. 2017
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)